

चो ज्ञान... नोर ऊं जवार परे अं
ग अंग रंग नरे असनाई नैन निका
वर नीन जाति है ॥ अधर अंजन ली
क फवी है कपोल पीक वसन पल
दि परे सोना ऊल काति है ॥ रस मस
अल वेली लटका है लाल नर मुंद
री की आरसी निरषि मुसिकाति है
हित कव असी छवि देषत हीरी फिर
ह प्रीति मकी अषियां तो कौं ऊन अ
धाति है ॥ ॥ ॥ रस मसे रसिया रसनी
ने होर वार रहे छुटि कै मन हरन ॥
भव नि सि जागे रग मगे लोचन प
गे रंग रति अति सुरंग अंग अंग स

लालफले॥ कुंजकेलिनवरंगविह
 रीसुरतिहिंजोरैफले॥ निसिजगे
 अलसातरगमगेपटपलटेगति
 नले॥ श्रीवीवलविपुलपुलकल
 लितादिक॥ ३॥ देषतदुममले॥
 ४॥ रगमगेरगमहलतैआवतनो
 रहरतिविहारमुषकीये॥ चलतमि
 गतधंमतदोऊप्रीतमअतिउनम
 तमहारसपीये॥ कछुमुसिक्यात
 आरसनरेनैनिसमरसुमिनिज
 गिविलसेहितकवत्रपितनाहि
 तउहीये॥ ५॥ अलकलमीराजति
 अलवेली॥ चुजजारैपियछैलछ

x स्त्रिंसन्निभुजदाये जघरिमुषजामि ४ जे

[illegible]

[illegible]

रसदांन॥२॥लटकिचलनिहितल
लचिद्रमपियडोलतवनकुंज॥
अमितगहतनुजसहजतियवर
मतआनंदकुंज॥३॥रूपछटाव
नसद्यनमैपत्रपत्ररहीछाया॥गो
रस्यममंगरागसमनुवनदियो
रगाया॥४॥पदा॥सोनितआजुछ
वीलीजोरी॥सुंदररसिकनवलम
नमोहनप्रलंबेलीनववैसकिशो
री॥वैसरिउतैहंसनिमैंडोलतसोछ
विलेतप्रानमतिचोरी॥हितकवफै
दीमीनयेअपियांनिरषतरूपप्रे
मकीजोरी॥५॥नैनकरतमनुहारवि

रसदांन॥२॥लटकिचलनिहित
लचिद्रमपियडोलतवनकुज॥
अमितगहतनुजसहजतियवर
मतआनंदपुजा॥३॥रूपछटाव
नसद्यनमैपञ्चपञ्चरहीछाया॥गो
रूपामिअगरागससनुवनदियो
रगमया॥४॥पदा॥सोमितआजुछ
वीलीजोरी॥सुंदररसिकनवलम
नमोहनप्रलंबेलीनववैसकिजो
री॥वेसरिउतैहंसनिमैडोलतसोछ
विलेतप्रानमतिचोरी॥हितकवफै
दीमीनयेअपियांनिरषतरूपप्रे
मकीजोरी॥५॥नैनकरतमनुहारदि

परसदेऊ एकपलकदिषियतन
सा^{मै नमै नमै} ज्योदपनमै नमै नमै सहितरपन
दिषवारी श्रीनटजोटकीअति
विऊपरतनमनधननवछावरमा
नवउरजउतंगरंगमृगमद
लेनवलविचित्रचित्ररचतअनमै
नकंचुकीकीटुकीसीलपिसंवारी
पयेषमकिसीदेवारीसुहरीविचवि
चअतिरंगुवाढतजबकरलचत॥
फैलेरंगहिगहिगहियौछतहारि
नमानतफिरिफिरिगौछतसंनरि
सुधारतनैकनउमचत॥ वद्वन्नरसि
कैअधवनीयेकंचुकीसोवनीवन

अंगनिरषिमोहनवपुनस्योरु
रुचकरी॥ वृंदावनहितसु
मिनियौं पियगतिमतिजकरी॥ ३॥
लालतुमरसनिधिप्यारीपाई
मानागकहाकहिवरनौंगतिम
जातिहिगई॥ १॥ देषोदृष्टि
अपुहीअचिरजअंगनिकाई
नछिननईनईबुविछलक
जातिवौराई॥ २॥ जो
सममऊंऊंनहीचल ॥
टिनुमिलैसारदामोह
जाई गुनलावन्तरूपह
नागरिकिनिविधिरुचिरवनाई॥

हे रसवसकरिलीनै श्रीहरिदासके स्वां
नी स्यां मां तो सीतिया कहि धों को है ॥ ३ ॥
वनीरी ते रंचारि चारि चूरी करनि
वसरी डलरी हीरन की नासा मुक्ता ट
नि ते सोई नै तनिक जरा फविर
निरषिकाम करनि ॥ श्रीहरिदास
स्वां मी स्यां मां कुंज विहारी री किरि
याये परनि ॥ ४ ॥ वीवी सां व
द्याला तेरा ॥ और अमल नना वै
हु ते मन मोह्या मेरा ॥ सऊवत मऊव
त धजार सओ सर सां ऊ सवेरा ॥ सरत
एव सुमारी प्यारी नु कलने हघनेरा
नरि नरि पीऊं पिवां ऊं तुही अचग

हे रसवसकरि लीनै श्रीहरिदास के स्वां
नी स्यां मां तो सीतिया कहि धों को है ॥ ३ ॥
वनीरी ते रें चारि चारि चूरी करनि
वसरी डलरी हीरन की नासा मुक्ता ट
नि ते सोई नैं तनिक जरा फविर
निरषिकाम नरनि ॥ श्रीहरिदास
स्वां मी स्यां मां कुंज विहारी री किरि
यायति परनि ॥ ४ ॥ वीवी सां व
याला तेरा ॥ और अमल नना
हुतै मन मोह्या मेरा ॥ सऊवत मऊव
तव डारस औ सरसां ऊ सवेरा ॥ सरत
एव सुमारी प्यारी नु कलने ह धनेरा
नरि नरि पी ऊं पिवां ऊं तुही अचग

नधरतकिसोर॥३॥जव
नजुकरनेमंजनन्य
नवानि॥सजिसिंगारलापि
करतवैकोसाहित्यतयलहा
॥४॥प्यारीजसुंदरवदनति
गरौ॥निरषिनिराषेप्रीतमसचु
पावतनिमषदिहोतनन्यारौ॥मं
दहासिपरहासिपरस्परनव
नेहनिहारौ॥श्रीविहारीविहारि
निदासिरहसिरसश्रीवृंदावि
नविहारौ॥२॥मुनगमुहागकौ
चिह्नप्यारीतेरैचरननिसौहे
नकीरजराजतवृंदावनदेष

मिलि विहरत छवि वटति सत गुनी
ऐसी रूप उजागरी ॥ लियें रहत
फनी मनी ड्यो पिय प्रांन नि
री ॥ वृंदावन हित रूप जाँ उँ वलिस
व विधि निधि अचरागरी ॥ राचे
करी सधियाँ चित वनि मै प्रा
चित टर कि ॥ कोरंचलति रंचक
जव अत मै तव ही पिय हिय
देव तु अर कि ॥ तेरो तन कस्य उ
नै वज्र रुचत तेरी वात निरहेने
सर गर कि ॥ वृंदावन हित रूप गु
न उदार तलाल देखै जीवत जा
हि नै कुन इत उत सर कि ॥ २॥

मीनकेतकेनिकेतनहै। अक्षरनिरंगनमें
दोकाकीचमकहोतअछुनिअलछि
तकटाछिसरदेतहै॥ नागरियाओट
दैतंदूराहसिहेरिहेरिफेरिकेरितांन
फिरायैमनलेतहै॥ ३॥ वैवेहरिरा
संगकुंजनवनअपनेरंगमुरलीम
रसुरसारंगमुखगार्ड। मोहनअ
सुजांसकलकलागुननि
वृजिएकतांनवृत्तिकैवजाई। प्या
रीजवगहोवीनसकलकलागुनप्र
नअतिनवीनरूपसहितवही
सुनाई। वहननगिरधरनलालरी
फिरईअंकमालकहतनलैजून

इ॥ कहा कहों कछु कहत न आवैं अं
 भुवि छाई गुलाल माल सो नित जु
 गल उर सो जा कहि न जाई ॥ मांनों घ
 न दामिनि उपर सर सुती मोर वनाई
 नंतरं गलोचन मीन पर स्पर्श
 षाई श्री कमल नैन न हित ने हर
 गिर सिसवी वलि जाई ॥ २ ॥ रूप की
 नी माला राजति सषिनु मंडली रा
 नति नमधि सो जा वटि परी आज ॥ म
 उपावसरितु घन दामिनि कौं सज्यो
 धिसौं दिव्यो सुन घरी राज ॥ तरु वे
 नै वरी गुजारति गावति वधाये
 बहु निसमाज ॥ वृंदावन हित रूप

ललिमल्लनिष्ठविजोरा॥मनुक
निकरिनीकरती॥मिलिमुकि
कंकरतकिजोरा॥५॥लखित
हुमनिप्रसंसहीरुचतपेलपिल
मल्लिगिजकुजनिविरमिये
हुतअलीवलिहारा॥दापदा॥
नकवरनकदलिनुमैप्यारीडरि
डरिवदनदिषावैहो॥नीलंव
नीपाछैराकापतिआगैधावैहो॥
कंचनगिरसाषाविदारिकिधौंवि
पुलतेजदरसावैहो॥वृंदावन
तरुपघटाकेसुषुलैउवरषा
हो॥१॥बोलतकतंकतंजाइ

हलकेमहलकेअहलके
मसहलकेतेमनहरके
केसहजसुहाग॥५॥पर
निकुंजनिमिलिषेलतजु
लनागरीनाज॥पञ्चपनि
रगहेंअध्यानलेतदेतउक्त
अतिउछाज॥वचनरच
नाहिदारीलेतकरसौमुष
सहारसदरतयौहसंधरत
ज॥श्रीविहारीदासिकीस
रसिकनामिनायौहीसव
नेजातनइन्हैप्रेमकेनेमु
॥१॥कंजमहलषेलैपर

रजवंदततिलकबनावतनाले ते
वरनबसनआनपनउरधरचंप
लै श्रीविठलविपुलविनोदविहा
नुजनरिनाऊविसालै॥३॥ आछी
सांछवीलेवैतेहैंछवीलीनांतिरतन
ऊंजमाहिवातैरतिकरहं॥परम
प्यारैताकतैअधिकप्यारैसमनरा
वनिचितैचितुहरहं॥नवलनव
स्वेधौहैमरमजायआनंदकौरा
मुषरसदरहं॥हितकुवराजिरी
वैकौनकछुआहिफिरिफिरिप्यारै
लपांयनमैपरही॥४॥ जबप्रसन्न
देषौतेरेइगातववितजंतैरोमुष

बुद्धेवारगरेयोतिदिपतिमुषकीजे
 तिदेषिदेषिप्रांनपतिरीजेतोहिनेन
 सलौंनोमनुमोहे॥निरषिथकितन
 ईसषीसबमेरीआलीजौंजौंप्रांनप
 रीतेरेमुषजोहे॥रसवसकरलानैव
 हरिवासकेस्वामीस्यांमांतेराउपमां
 कोहिधौकोहे॥॥॥मेरीलालरंगी
 गंगनस्यो॥जोनावैसोकरोकिसो
 रीमोहनतेरेवसपस्यो॥जमुनांपु
 निननिजंजमवनमैसर्वसुसक्ति
 कौंधस्यो॥श्रीविवलविपुलविनोद
 विहारीसघनगांविदेवरवस्यो॥
 दीउमदमांतेलगनिलगेरगमगे

हस्तसुरनारिसोपावपलोठनहार
॥३॥ कहुनकहस्तअतिगतिसहत
गहतबहतदिगदारा॥बंकनौ
नररहतजकजमहतलषचष
॥४॥ प्रांनेसुरहौचषनबसयेर
सरनलमाया॥असौअपियाल
अनषचषकदेतवकुराया॥४॥५
तेलाजलकनउतैसपियन
अवा॥हाहाकरकरदईतंदयादे
पिउरलावा॥५॥पद॥तेरैरसवस
रोतोसातंहोबुधनानडलारी॥त्रि
वनजुवतीपटतरनाहिनउपम
कौमतिहारी॥तेरोहीसुहागनागत

वनवीथने जितति ते रौंड रूप द्विग
अवगाहतु धनि धनि नाग सुहाग
राग आनंद घन सव वृज जु सराह
तु ॥ ३ ॥ कि सो रा मे रा जीवन प्राण वा
रवार कहा कहि सम जं ऊं ह जाग
नहि आन जव देखौ तव उर नैन
मुख विन देखै अकुलान श्री
नैन हित होव स ते र जानत हो जिय
जान ॥ ४ ॥ घृघट पट मृड ह सनि
निसुहाई लखिल ^{नखिल} लखिल लखौ ही
तौ हा प्राति वडाई रहिन सकत स
कुचत अलि गन मधि नैन जल ता स
रसाई लाल रूप हित रूप रसा

ये परमरसिक सुषट्ठेन ॥ २ ॥
तल्ले चेल्ले फल्लरी करीतने
जोह ॥ जी जत पुन जी जत निरख
निचस मिथलोह ॥ ३ ॥ उतर सुसम
कही जिये यहै चातुरी आह ॥ प्रिय
हिंदु वतरा न कील गारहत चितव
ह ॥ ४ ॥ कही कुं वस्त्र लिकानल
ना पिय प्यारो प्राणा ॥ पुलकिरो मसुर
नंग नौ ज किथ किरहे सुजान ॥ ५ ॥
परी पीय के कोन मे नरी प्रेम की वात
गहवर नर आयो गरी धरो छिपावत
जात ॥ ६ ॥ पदा ॥ अहो लाल के तिक
षति हारे ^न नैन ^{तपति} निकवक्त होता मोह

हहत ॥ १ ॥ एहौ स्यां मधुलिवलिकीनं
होया समजनीकी जां निवृजि उत्तरन
जत ज्यो ज्यो में कही वात कछु
तो अमी सो अचै कै
जत मौन ही में गुन
इ नी तरी तो बुद्धि में ते तत न कन
हंदा वन हित रूपर
जी कै जानै इहि विधिर हिर सपी जत
कहत सपी के अवन लगि
हितौ स्यां भमाई प्रांन ते स
मुलकित न ही यन यौ सजनां अवि
मी समवचन जव सुनै प्रीतम की सा
ताइने हकीनिकाई माई प्र

लाडिलीलाज्जा॥ गोरस्यममसिद्धि
 दितमनुउडगनसहृदिजाला॥ १॥
 प्रेड्यैडमैमैडडविश्रैडवृत्तति
 मेना॥ ह्रैडिडवृत्तति॥ २॥
 ताकहतवर्तन॥ ३॥ हरपिउवीत
 सुसपदजुगआगमनविकास
 अकुरपद्वैतफलफलकानन
 दतजलासा॥ ४॥ गरवहियांहि
 यवमहियांततसुप्रचहियांघेल
 ॥ सहियांछहियांज्यौलमीकोतु
 कचचतनवेल॥ ५॥ लईनवाड
 मियडारतहश्रोततनिजपट
 फलो॥ लेजलेजहसरसश्रुति

हनश्रहामत्तगजगतिजुटलेहै। मरु
नवधनमें कौंधति दांमि निपवनप
तपटछोरहलेहैं॥२॥ कटिउरसीव
सुरीकमलकरतनजोवनगोनाउ
ऊलेहैं। वंशवनहितरूपवलिगई
गौरीगावतरंगरलेहैं॥३॥ वनीआ
जुआवतबालालरकिधरतिपगव
नकोतिकजुउमाऊ। दृगश्रतिलोल
वदनमूडमुसिकनिधिरकतिवेशरि
दमकतवाजूवाऊ। सविनुमउली
सनामनौउउगनपारसुवैगोससि
नस्योउत्साऊ। वंशवनहितरूपनि
धिवाद्योतामैगोतालेतुपथिकमउ

मकीकांनि विहारनिदासिलडाव
छिनछिनहिलगहिएकीजांनि॥१॥
रूपनिधाननांवतोअतिलड
छिनजोईपलनिकटपाइय
रजिजनमसोईनागनिवडुनां
नांतिकाठोरठोरछविम वि
नमेंपरीरहतगननागरी
अकहवातहेहियहीसमुजेंचोंप
चायचउ॥२॥ नवित्ताआलिन
आगेंनीकेंनाहकौननिरपतिनें
ननिमेंनीरधिसौनेहउमग हे
बालमकीवातबूजेंबालतन
कुपरिआरकेंसोवारिजबद

तेरा नसौ जा निपिय जी की गइरा
हेली सब देषतन वेली डरा रंघनि
नसौ ॥ १ ॥ दावत को नाराज
ने देषतन दीवन रिझै सी सुकुं वारा नैन
नक्त तै प्यार है माफरी सहज कछु कह
न वनि आवै नै कुहा कै चित वत चकि
न विहारा है कौन नोति मुष की अनूप
ते सरसांति करत विचार तउ जात न वि
वारा है हित क्वमन पस्यो रूप के नैवर
॥ १ ॥ फने हव सभ ये सुधि देह की विसारा है
निपदा कजरा घुरि रह्यो और बैदी रो
की पिय सुहाग की जल कनि मुष परल
लकनि नेह दसा गोरी की सहज सिंगार

गौं बुदी अलकै मृडमंजु मिं ही अति मू
ल छलानि अनी मुरला गौं वनी अं वि
यां नि मै अं जन रे प्रल जी ली चित्तौ नि
हियोर स प्रा गौं सुहा ग सौं ओ पित
द्वि प्रे धन आ न द ज्ञान पि
गौं ॥ हा कि चित्त ॥ उर ज उ तं ग सु
रत न रे स अंग अ धर सुरंग सौं रंगी
ति जात है ॥ ऊंची गुही वें नी सुत नै नी
नौं हनाय नरी आय नरी छ विह सित
सि इतरात है ॥ वल्लन रसिक दो
मुष रुष मुष च कित य कित कित द्यौं
कित रात है ॥ नैन न सिहां न तर सां
रसां न ल ल चान मु स क्यां न आं न द

गो। सुदीअलकै मूडमंजुमिंही सुतिमू
लछलानिअनी मुरलागै। वनीअंवि
यांनिमैअंजनरेप्रलजीलाचितौनि
हियोरसप्रागै। सुहागसैअपितना
दिप्रयनआनेदजानपियाअनु
गमै॥ दाकवित्त॥ अरजउतंगसुक्ति
रतनरसेअंगअधरसुरंगसौरंगीसाम
तिजातहै। ऊंचीगुहा
नौहनायनरीआयन
सिद्धरातहै। वल्लनर
मुषरुषमुषचकितयकित
कितरातहै। नैननसिहानतर
लचानमुसक्यानआन

ललनेहनदीनसषीतिनसौ
चमुषमोरतिहैं प्रथमागमसं
छुटकुछुपैचितमैरसरीति
रति॥ कदिआलमघंघटओ
मैकवहूप्रियसौडिगजोरतिहैं
जितनौचितयोवहिंदोरचहेंपु
तराजुरिलाजबहोरतिहैं॥
द्वेरा॥ मोहनललाकौमनमौ
हनाविलोकिवालकसुकरिग
तिहैंउमंगउमाहकौ॥ सषिनकी
नीवकौवचाइकैविलोक
आनंदप्रवाहबीचिपाव
हकौ॥ कविमतिरामआरसंव

रीकपाश्रवलो कनिदांनदै
तजुलोचनचकोर है ताहि वदन
इंदुकिरन पांनदै सवविधि
वरिसुजांन सुंदरिसुनहिंन
तीकांनदै गोविंदप्रभुपियवर
नपरसिकहै पियजाचक कौमा
नदै मेरै नैनो हीयह जांनै
जेतिक नीरपरतश्रवलो कतवै
रचौरछविमांजविकांनै रूपश्र
गाधश्रवधिसषांश्रंगअंगरसनां
वपुरी कहावैषांनै तनमनवृम
जातदेषतही कहा होय उरनात
रआंनै सुधिबुधिवलवितुच

॥ नितिनवदलहि निलाडिलीनि
नवदलजलाला ॥ रूपरीजरससम
सजमानतलालनिहाल ॥ ४ ॥ पद
॥ अननतीअधियनिचितवतेस्फि
तिहैमनलालकौनववालचलतिल
टकतिगतिआवतिहैसुषदेनातनसि
गारसुकुंवारसमजिकह्योस्यामसो जौ
हीसोमुषलियेनैनसैनदिनवैनच
लिआयेसुषपाइनवनिकुंजमैसुषपु
जप्रियापियउदितमुदितमनमैन
श्रीविहारीदासस्वामिनीस्यामवरव
सकीयेसुरतिरतिजीतेयोंगरवगने
न ॥ १ ॥ देषिदेषिमुषजीवतयौसुष

कराई सरनतामत्तमुदितमनसि
जविवसाई नितनवीनप्रेमप्रवीन
एडलहाडलहिनिअधीनदे
वनतिवनिकछविचरनीन
विहारनिदासिरीकरहीअचपलनि
कीचपलाड ॥४॥ ॥ ॥ गगपूरीया
त्याएकेअवुकमकीअलापतारी
मेदेनेएदोहा ॥ ॥ अधियारीघुघट
येनवेजावनछकशर ॥ ॥ गजगोन
लिकैकरतगजूरकौचूरा ॥ ॥ अ
गतिरूपसकौनकहिमत्तअदाहा
गोन ॥ ॥ पीविकटाछिनसोंगिरेदीव
सहारैकौन ॥ ॥ ॥ लललनरिजायेव

रविहारीविहारनिमोहेगतिकौ
हीवितवनिहसनिक्यौकहिपरति।
परतप्रेमनिधिपाडरुचिरजहो।
रीसषामेरोजो जान
धौंआंविनितहां वितव ततर
तरवतिराछौतनतकि कीयें
छहां नागरीदासिचरनजु
नियहसुषमोकोअनतकहां॥२॥
छुटीचुरीएकसरचूरानेंपुरमंडि
तजावकजुतपग अवयवश्च
तरुपगुनसागरछवि
मनहिलग।गौरचरनजुग
चंडनषअतिरुचिरचिप

रीवतरंगनिउचरही॥ कवजकवज्जर
हिजातएकटकवज्जरिछ
यांधुरिदुरिही॥ नागरीदासिमो
नीमोहनराफिपरसपरश्रंक
रही॥ ५॥ कविट्ट॥ सीसलाय
छायहियेपैवसायराधौंइतमां
नमनआवैप्रांननमैलैधरौं हेरि
हेरिचूमिचूमिसोनाछकिधूं
धूमिपरसिकपोलनिसौंमजन
कियौकरौं कैलिकलाकंदरवि
लामनिधिमेंदिरयेइनहीके
लहौंमनोजसिंधकौंतरीयातै
धनआनंदसुजानप्यारीरी

यस्यांमसुदंपतिजोजियचाहजतीसु
लही॥१॥ प्यारैहसिनेंटीडलही॥ कि
हिंदिविछुटेमफपपियसोंतियल
ताफलउलही॥ वदनडराव
टपटमेजलकतअंधियांछ
ही॥ नागरियामोहनमुषखोलत
दरताउलही॥२॥ आजरंगहेनिहोर
नापेंछहरिछहरिउठैलहरिनेह
ममिलनिप्यारीमुषघूंघटपियषो
तनिजकंपदेह॥ जौनैचौरकुको
षियांसऊचनरीमुषस्यांमगेह
निरषिडकटकमनमोहननागरी
दासबलड्यालेह॥३॥ कविता॥

रतसुघरपीकप्रधरपरसकैं। लषिलषि
रूपछकिथकिचकिजकिजातअति
ललचातदूरिकरनकरिसकैं॥५॥
लाजनिलपैटीचितवनिनेदनाश्न
रीलसितललितलोचषतिरछों
नै छविकोसदनगोरौवदनरु
लरसनिचुरतुमीवीमृडमुसकां
दसनदमकिफलहियैमोतीमा
तिपियसौलटकिप्रेमपगीवतरा
मैं॥ आनंदकानिधिजगमगतिछ
लीबालअंगनिअनंगरंगदुरिमु
जानिमैं॥ द्वाकदित॥ करैरसवा
हकसिहसिमु रिजातदरिमा

॥ हृदयं न हृदयं दिसं तमाहृतमुसिक
जिह्वा निजिम हितक कौर हृदाव
न हितक पञ्च अं वलि प्रेम मुदित नि
तैत शीतम कामन मार विरमिवि
रनिमं री लोचन नो हिन करे फिरत
जिह्वा निजिम वलि वलि हित गौर स्या
विहृत निहिं वलि री करी जिह्वा
तैत वृहत् सप्त परं गच्छिनि छिन मैत्र
कमनु गाव सप्त न फिरत हृदय
न परम कौतुकी मिथुन सु
वलि मान केति रत जिह्वा मि
नो हिन सौ करि मन नायो
री लाल रस व स विलस

सिरकलंगीछुविसरसातरहिनीरी
ललितावीरीदैवातकरतप्पा
का३॥नागरस्यामसधानिरततथा
गैगांनघमनिरह्यौकउति
हात॥१॥फव्यौउदौफैंटागोरेनाल
रबैदीलालसौनेसतकलगीके
जुकेदांहनेछुटीअलकस्यामपर
हालसुवनवनीनथफेरतफिरफि
धानघातइतरातवालदरपनलवि
जवाररीजिलजिउवंगीपियासौंज
नरीबह्ननरसिक
प्यारौरूपवि
वडेवि

वहेरिहेरिबटैंचोंपक्योंहूँनश्रधात

॥२॥कविता॥प्यारीजकीमुसिका

जुरीसीकौंधिजातिप्यारेजकेउरतैनरे

पसीटरतिहेनरिनरिआवैनैनकैसैं

स्तनपावैचैनबांनकीसीअनीहिये

रधोकरतिहेलाफिलीनवेलीअल

वेलीघांनिमाफरीकीमदजमभा

जोयोतासमतहाराधतरोदरसपरस

मजीवनसुनिरीलडैतीतरससिं

धेहैंमनवचक्रमतोहीध्यावतुतु

हितकौवजसाधनसाधेहंदाव

हितकहतलालयोंषमूडवांनी

छिन

॥२॥मैयह

गर्वति वास्यौ राजति वां मदि सप
रम विवित्र चालरसिक लालपिय
दुरत दशारे दृगसन मुख चितव
हमदनर सारंग मीन कंथ धीन
आरक्ष्य प्रज जहरि कैहि
टिक कुरंग वृंदावन हित कुटिल
टिष्ठ विररतिलाल दृगपंग
॥ रागनायकी काहरा का अचुक्रम
मलापचारी मेह न ए दोहा ॥ चारति
दित मोरति दिगति जोरति उरज उत
गा ॥ वचन रचन कल कुंज में उठत
अनरातर गा ॥ रा चौ पचठे चायनि
नद पद को ककल गीता ॥

मिथ्यावपुराको धरकतुही यो है ॥ समजो
 गिनु की अक एक हां नी को समवी यो है
 छंदावन हित रूप कुंज निहि को तिक
 का यो है ॥ ४॥ ४४ ॥ तम गारा को नहरा ॥
 अक नु क म की न ल प चारी मे दे नै ॥
 ॥ य न ग न मा न त वा ल तु व गु न
 नि ग हा लो ला ल ॥ पू र नि म न अ निल
 अनित व र य त रं ग र सा द ॥ १॥ लि यो
 हि यो न रि धी य को दि यो सुर ति रं ग वा
 ॥ कि यो सुर स व स आ प नै प्रे म सिं धु
 ऊ क जी रा ॥ २॥ सुर ति न दी की ल ह र
 मे क ह र वि हार नै की न ॥ पिय म न पा
 न प नो र मे अ रा जा रि जि हि दी न ॥ ३

नैष्ठिकविधनीधनेनृषनजराउंग
वरनवरनपवनऊकोरओरघोरिधो
रिचकंदिसछटीजलधारालापैविट
पजरनटंदावनहितरूपपीतपटखे
ईकरैओहैपियप्यारीगढेमनकेहर
न॥१॥ एअतिघूमयुमारीसहीसारीप
हिरैनाम॥ अतिरोटाअतिरंगरंगालो
पुनिरहीउरपरचोलीस्याम॥ अंचलछो
रमोरिधास्योसिरपरछविकीछटाल
जैकोटिकांम॥ टंदावनहितछटीलट
आननरहेइकटकअवलोकिस्याम
॥२॥ कसघननयौआलारीतिनहिग
मोतादेति॥ अधिकामिनिओरजे

पाछुकोनरषत्संवाह्योलालसज्ज
जवमुरिचह्यो। आयचुनी॥ श्रीवीकल
वरषनदेखिलतागृहेमदनजीतित
वंदावनहितनिगुनी॥ निसुहा
ते मोपैकतेरोतसर्वोपरराक्षेजरान
नीर्षयंगअंगवांनीप्रीतमप्रानस
मानांसिककिशोरसुरतिसुषदांनी
कोजांनैवरनैवपुराकविअद्भुतछ
बिनहिजातवषांनी॥ श्रीविहारीद
सपियसौरतिमांनीमेंजांनीसयांनी
तोहिसवनिस्सिसुषसिरांनी॥ ३॥ र
सिकुंवररसिकनीरसरसिरसिकसु
घररसिकनिजीवनिजुगलपरस्प

९४	पद॥ गंगोरीमनलालफवीतन	१०१	पदा॥ प्यारीआजहंदावन
९४	राममदालकीमलारकादो	१०१	पदा॥ आयावृजपरछायजी
९५	पदा॥ तलेरीयहतांनमलार	१०१	पदा॥ पावसरितुहंदावनकी
९५	पदा॥ पावसरीराधेतौहिमुष	१०२	रागदेशीमलारकादोहाधा॥
९५	पदा॥ कौनरंगरंगिमाझंगी	१०२	पदा॥ वनछायेगिरवरदाम
९५	पदा॥ दंपतीसोनाआजुव	१०२	पदा॥ घरहरघूमराछकि
९५	राममदालकादोहाधपु	१०२	पदा॥ सोवणियेदिलंधीसा
९६	पदा॥ लेतुनहरकेगातनील	१०३	पदा॥ मेहउलोखबियोध्र
९६	पदा॥ अवधनवरसनलपे		
९६	पदा॥ गदेदोकएकहिषुहि		
९७	पदा॥ मजुऊजघरेप्रियाप्रीत		
९७	पदा॥ कुंजकुटीरकोकिला		
९७	पदा॥ पुनिरहीगारेगातघू		
९७	रागधरियामलारकादोहाध		
९८	पदा॥ दोउजनफलेअंगनमा		
९८	पदा॥ सजतकुंजनतेंदोक		
९८	पदा॥ स्पामसुनगतनपीत्त		
९८	पदा॥ कंवनतनछविफदी		
९९	राममलारलहरकादोहाध		
९९	पदा॥ इहिरितुओमरआजु		

आवतज्यौज्यौबुंदपरतचूंनरिपरित्ये
लौहरिउरलावतटेकअतिगंनार
जानेमेघुनकीडुमतरछिनविरभाव
तजैआनटरसिकरसलंपटहिलि
मिलिहियसचुपावत॥२॥स्यांसुन
गतनपातवसनछविकुंवरिगहरं
गकसूंजीसारीलहंगापीतवसरत
हारावलिचौकीकुचनिविचकंचुकी
रागीहसिवनरिनसंगनिदेषतलस
तअकअंसनुजसुकुंवारा॥दोजमुदि
तीमलारनिगावतनागरीदासिदरसि
उतिवारी॥३॥कंचनतनछविकुंची
लडेतीकसूंजीसुरंगसारीसहजसुहा

निवेगचलितांवती। प्यारीरीछिनछि
नआवतहैवरषासरसांवती। वहिसु
निमिलीमलारवेनधुनिआवतहै
वरषासरसांवती। वहिसुनिमिली
मलारवेनधुनिआवहं। प्यारीरीक
हिकहिराधेतोहिवुलावहं। सुनत
अगअगरायकछमुसक्यायकौ। प्या
रीरीजीजतहीघनमोकचलीअकुला
यकौ। मनमुषआयेस्यामनुजननरि
केलीहै। प्यारीरीलपटीतरुनितमा
नमनूछविवेलीहै। योंदंपतिनिति
करतहैतहांविलासकौ। प्यारीरीदेदा
वनदयौवाससोनागरीदासकौ॥१॥

है। प्यारी उठि चल
कुलानी है। ये प्यारी विह
ह मिले पिय प्यारी है। प्यारी जन माधो
बल जाय चरन उर धारी है ॥२॥ आया
बज पर छा यजी जल वाद ल करि
इण समये सुषलेण मनोरथ दंपति
हिय धरिया मिलियारसिक विहारी
प्यारी ऊकार जसरिया ॥३॥ पाव सरि
तुष्ट दावन की डति दिन
रसै है छवि सरसै है लं मिऊ
धनौ धनवर सै है हरिया तरवर सर
वर नरि
नमो लै है प्यारी जी रौ वाग सुहां व

नलाउमंगा॥सेचिद्विद्वेजीमहचरीहरष
 नमाद्वैभंगा॥रादेवाहमनरेविचममसा
 छिपीवताया॥चमिहंसियाफसियावजा
 द्योहरषगयोछाया॥रातियकिसासा
 मिसद्वैलयाउगीवमेलणगायगस्याव
 नदगलाजवदचदगानैहदुषाया॥र
 ॥साससंनानीकहोआवेछैजुवराजा॥इ
 तैमाथोमेहपरयांनैआईलाजा॥आसा
 लीराणीसूकहोगायगायफिरगाय॥
 द्योदिनजलादिषाईयोसैमकिरणैराय
 ॥५॥प्याल॥घरहरघूंमरांजीछकछाजै
 द्यारौगाढोमारुआवेछैमदमांतैउमहो
 ॥पियलोनागैलैबारनलावेछैबोलैमो

लगापगांसिहसहस्रतिहुंजलांग।प॥
प्याला॥सांवलिधेंविलंजोसाहिवाध
देसरांगभरीमौजांमनमांनोरसिककुंव
रथरांवेस॥इंआंआंआतुरनिरवण
सआवेसा लागीचाहआपअनुरागी॥
दोवरदांनहमेसाह॥आ॥मेहडलो
दियोअजबकजीरांगरीमची॥नेह
लेबजंममैमतवालीमोजसची॥
लेमलरैमधिनाथककुंदगरेषसची॥
लसंमलरोदमलकियोधलउपमां
चीकची॥आ॥॥

